पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मृति स्वास्थ्य विज्ञान एवं आयुष विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ एक पृथक राज्य के रूप में गठन 1 नवम्बर 2000 को हुआ, जो यहां के लिए एक ऐतिहासिक क्षण था। इसके साथ ही छत्तीसगढ़ सरकार ने समग्र विकास को प्राथमिकता दी और स्वास्थ्य सेवाओं के ढांचे को सुदृढ़ करने पर विशेष बल दिया। राज्यभर में अनेक अस्पताल, क्लिनिक और औषधालय खोले गए तथा योग्य डॉक्टरों और स्टाफ की नियुक्ति की गई, जिससे राज्य में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित किया जा सके।

स्वास्थ्य क्षेत्र में कुशल पेशेवरों की बढ़ती आवश्यकता को देखते हुए सरकार ने नए मेडिकल कॉलजों की स्थापना की। राज्य में बीते 150 वर्षों से प्रचलित आधुनिक चिकित्सा प्रणाली के साथ–साथ पारंपरिक भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के महत्व को समझते हुए, सरकार ने सभी स्वास्थ्य विज्ञान धाराओं की शिक्षा को प्रोत्साहित और विनियमित करने का निर्णय लिया। इसी उद्देश्य से छत्तीसगढ़ विधानसभा द्वारा "आयुष एवं स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय अधिनियम, 2008" पारित किया गया।इस अधिनियम के अंतर्गत, दिनांक 16 सितम्बर 2008 को विश्वविद्यालय की स्थापना हुई और आज इसे गर्व के साथ " पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मृति स्वास्थ्य विज्ञान एवं आयुष विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़" के नाम से जाना जाता है।

यह विश्वविद्यालय एक शिक्षण, शोध एवं संबद्धन संस्थान के रूप में कार्य करता है, जिसका उद्देश्य आधुनिक चिकित्सा, आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, होम्योपैथी, दंत चिकित्सा, फार्मेसी, नर्सिंग, फिजियोथेरेपी एवं जनस्वास्थ्य जैसे विषयों में व्यवस्थित शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान करना है। यह राज्य के सभी स्वास्थ्य विज्ञान महाविद्यालयों को शासित एवं संबद्ध करता है, जिससे शैक्षणिक उत्कृष्टता और व्यावसायिक दक्षता को बढ़ावा मिलता है। हमारी पहचान, और हमारा गौरव स्वास्थ्य सेवा के इस पवित्र क्षेत्र में आने वाले पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा–स्त्रोत है।

छत्तीसगढ़ आदिवासी , स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा एवं औषधि पादप बोर्ड

छत्तीसगढ़, जिसे हर्बल स्टेट के नाम से जाना जाता है, औषधीय पौधों और जैव विविधता का एक समृद्ध भंडार है। यहाँ की लगभग 44 भूमि वन क्षेत्र से आच्छादित है, जो पारंपरिक स्वास्थ्य पद्धतियों और औषधीय पौधों के सतत उपयोग को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत उपयुक्त है। छत्तीसगढ़ आदिवासी, स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा एवं औषधि पादप बोर्ड इस दिशा में एक प्रमुख भूमिका निभा रहा है। यह बोर्ड औषधीय पौधों की मूल्य संवर्धन, बाजार से जुड़ाव, और स्थानीय समुदाय की भागीदारी को प्रोत्साहित करता है। पारंपरिक वैद्यों की मान्यता, वनौषधियों का संसाधन, मानचित्रण, और स्थानीय स्तर पर हर्बल बाजार की स्थापना जैसे नवाचारों के माध्यम से यह बोर्ड राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका संवर्धन एवं जैव विविधता संरक्षण को एक नया आयाम दे रहा है।

राष्ट्रीय औषधि पादप बोर्ड और अन्य संस्थाओं के सहयोग से यह बोर्ड छत्तीसगढ़ को औषधीय पौधों के निर्यात में अग्रणी राज्य बनाने के लिए कृतसंकल्पित है।

कार्यशाला के संदर्भ में:–

छत्तीसगढ़, जो अपनी समृद्ध जैव विविधता और जनजातीय विरासत के लिए प्रसिद्ध है, अनेक पारंपरिक चिकित्सकों का निवास स्थल है, जो सदियों पुराने स्वदेशी ज्ञान के माध्यम से जड़ी–बूटियों, खनिजों एवं आध्यात्मिक विधियों से रोगों का उपचार करते हैं।

स्थानीय रूप से बैगा, वैद्य, ओझा आदि नामों से पहचाने जाने वाले ये पारंपरिक चिकित्सक ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों की स्वास्थ्य सेवाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। किंतु आधुनिकता, दस्तावेजीकरण की कमी और पीढ़ीगत अंतराल के कारण यह अमूल्य ज्ञान लुप्त होने की कगार पर है। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य छत्तीसगढ़ पारंपरिक चिकित्सकों की उपचार विधियों का संरक्षण, संवर्धन एवं वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण करना है, ताकि इन्हें स्वदेशी ज्ञान प्रणाली (Indigenous Knowledge Systems) के व्यापक ढांचे में एकीकृत किया जा सके तथा पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मृति स्वास्थ्य विज्ञान एंव आयुष विश्वविद्यालय रायपुर जैसे संस्थानों के अंतर्गत मान्यता प्रदान की जा सके।

कार्यशाला के उद्देश्य:–

- छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों से पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान करना, उन्हें आमंत्रित करना एवं एक मंच पर एकत्रित करना।
- पारंपरिक उपचार विधियों, अनुष्ठानों एवं हर्बल उपचारों को साझा करने हेतु एक मंच का निर्माण करना।
- उनके ज्ञान और विधियों का वैज्ञानिक एवं प्रणालीबद्ध रूप से दस्तावेजीकरण करना, ताकि उनका संरक्षण एवं प्रमाणन किया जा सके।
- पारंपरिक चिकित्सकों एवं आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा तथा यूनानी प्रणाली के आधुनिक चिकित्सकों के बीच सहयोग के अवसरों का अन्वेषण करना।
- शैक्षणिक संस्थानों, विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं को पारंपरिक चिकित्सकीय ज्ञान के संरक्षण के महत्व के प्रति संवेदनशील बनाना।
- आयुष विश्वविद्यालय एवं संबद्ध संस्थाओं के सहयोग से पारंपरिक उपचार विधियों का एक डिजिटल एवं भौतिक भंडार (repository) तैयार करने की प्रक्रिया आरंभ करना।

पं. दी.द.उ.स्मृ.स्वा.वि. एवं आयुष विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, रायपुर

एवं

छत्तीसगढ़ आदिवासी, स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा एवं औषधि पादप बोर्ड के संयुक्त तत्वाधान में एक दिवसीय कार्यशाला

"छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक: स्वदेशी ज्ञान प्रणाली (Indigenous Knowledge Systems) का संरक्षण"

दिनांक : 28.05.2025 समय : 09:30 बजे

स्थान

सभागार

पं. दी.द.उ.स्मृ.स्वा.वि. एवं आयुष वि.वि. छत्तीसगढ़, उपरवारा अटल नगर, सेक्टर –40,रायपुर छ.ग. 493661

डॉ. दिनेश कुमार सिन्हा
कुलसचिव

डॉ. चंद्रेश्वर प्रसाद सिन्हा
कार्यक्रम समन्वयक
मो. 8225000010

संपर्क
श्री थानेश्वर कुमार साहू, सलाहकार, टी.टी.आई. – 9165527714